प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

इतिहास एक विषय वस्तु है और उसका कालक्रम और घटनाओं को है, जिनका शुरुआत से लेकर आज तक आधुनिक के लिए उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया है। अतः यहाँ पर प्राचीन भारत के इतिहास के ज्ञान काल के अध्ययन के लिए प्रमुख स्रोतों की जानकारी उपलब्ध कराना है। कुछ समय पहले तक प्राचीन भारत के सम्बन्ध में ऐसा विचार बना था कि भारतीयों ने अपना कोई ऐसा व्यवस्थित इतिहास नहीं लिखा, लिखने की कला नहीं थी, यद्यपि अन्य पुरातत्व का पर बल नहीं दिया गया था, वास्तविकता में भारत का इतिहास महत्वपूर्ण घटनाओं से भरा था, जिसका निष्पादन होना है। यह कहा गया कि भारतीय कथाओं को धार्मिक प्रवृत्ति नहीं हुआ। पौराणिक, ऐतिहासिक (गाथाओं) आदि के अध्ययन से मालूम होता है प्राचीन भारतीय वाङ्मय के विपुल रूप संकलन के स्रोत भी हैं। प्राचीन भारत में इतिहास लिखने का प्रचलन नहीं थी। इतिहास की जगह लौकिक उपाख्यानों का स्थान प्राप्त था और राजाओं का जीवन लौकिक उपाख्यानों के रूप था। फिर एक कठिनाई यह थी कि भारतीय, अंग्रेज और Muslim भी एक अलग मानते थे। अतः इस कारण से, इतिहास और Muslim का परिभाषित करते हैं। विदेशी आक्रमणों ने इतिहास का अनेक सामग्रियों को नष्ट कर दिया। एक बड़ी कठिनाई इस बात की होती है कि विदेशी व्यक्तियों एवं इतिहासकारों ने अपनी मान्यताओं के आधार पर प्रस्तुत किया, जो वास्तव पर आधारित नहीं है। वर्तमान अन्वेषण के कारण और फिर प्रयत्नों के बाद भारतीय विद्वान तथा भारतीय इतिहास कांग्रेस ने उपलब्ध स्रोतों का अध्ययन आज एक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए जो सामग्री उपलब्ध है, उन्हें हम सुविधा के लिए तीन भागों में बाँट सकते हैं :—

(i) पुरातत्व :- उत्खनन से प्राप्त सामग्री, मुद्रा, अभिलेख तथा स्मारक, अभिलेख आदि,

(ii) साहित्य और अनुश्रुति का ऐतिहासिक तथा समकालीन हिन्दू साहित्य, बौद्ध साहित्य और जैन साहित्य इत्यादि।

(iii) विदेशी लेखक और यात्रियों का विवरण - जिनमें यूनान के लेखक और विदेशी यात्री, चीनी यात्री, अरब यात्री,

2

मिलते जो भारतीय इतिहास की जानकारी देते हैं।

पुरातत्व :- पुरातत्व वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित होता है, अतः यह सबसे महत्वपूर्ण साधन है। प्राचीन भारतीय इतिहास के लेखन में पुरातत्व सामग्री बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। पुरातत्व के अंतर्गत मुख्य चार साधन हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(१) उत्खनन से प्राप्त सामग्री :- उत्खनन से भारत के प्राचीन इतिहास पर काफी प्रकाश पड़ा है। प्रागैतिहासिक काल का समस्त इतिहास हमें इसी सामग्री से प्राप्त होते हैं। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, रूपड़, कालीबंगन आदि पुरातात्विक स्थानों के इतिहास का निरूपण मात्र पुरातात्विक उत्खनन से ही संभव हो सका है। शिशुपालगढ़, नागार्जुन आदि स्थानों से प्राप्त सामग्री के आधार पर भारतीय इतिहास के निर्माण में काफी सहायता मिली है। उत्खनन से प्राप्त दुर्ग, बरतनों, औजारों, मूर्तियों, अभिलेखों, सिक्कों, सोपानों इत्यादि से भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों पर प्रकाश पड़ता है।

[illegible]

अरिकमेडु

(२) अभिलेख :- अभिलेख के अंतर्गत गुफालेख, शिलालेख, स्तम्भलेख, ताम्रपत्र आदि आते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में इनका बड़ा महत्व है। विषय भेद के आधार पर इसके अन्तर्गत कुछ राजाज्ञा (राजशासन पत्र), प्रशस्ति पत्र, पुण्यदान पत्र, पुण्यसमर्पण पत्र और स्मारक भी हैं। अभिलेखों के द्वारा सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक व्यवस्थाओं पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। भारत के भीतर से प्राप्त अभिलेखों से भी भारतीय इतिहास के अध्ययन पर काफी प्रकाश पड़ता है। भारत के बाहर से प्राप्त अभिलेखों से भी भारतीय इतिहास के अध्ययन पर काफी प्रकाश पड़ता है और उसमें सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि भारत से बाहर जो अभिलेख मिले हैं उनसे स्वामी के इतिहास पर भी प्रकाश पड़ता है।

(३) सिक्के :- सोना, चाँदी, ताँबा और मिश्रित धातुओं के बने सिक्के प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में काफी सहायक सिद्ध हुए हैं। ई० पू० २०६ से ३०० ई० तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें तत्कालीन मुद्राओं की सहायता से हो सका है। तिथि निर्धारण में अभिलेख और सिक्के समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। प्राचीन भारत के राजाओं पर सिक्कों से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

तत्कालीन

Scanned by CamScanner

के राजाओं के धार्मिक नीतियों और उनके शासन की भी जानकारी मिलती है।

सिक्कों से प्राचीन राजाओं के शासन विस्तार, उनकी मुहरों, मुद्राओं एवं उपाधियों का परिचय प्राप्त हो जाता है। सिक्कों से तत्कालीन जीवन का आर्थिक पक्ष के भी प्रमाण प्राप्त हैं। आर्थिक व्यवस्था के क्रम-विकास में भी सिक्कों की महत्ता अत्यधिक है। सिक्कों की शुद्धता, धातु और आर्थिक व्यवस्था का पता चलता है। मुद्राओं की संख्या इतनी स्वीकार की गई है कि व्यापार उनके प्रयोजन के लिए उत्तम मुद्रा प्रणाली का प्रयोग हो जाता है।

(8) स्थापत्य और स्मारक :- प्राचीन भवन, मंदिर, मूर्तियाँ आदि के सूक्ष्म अध्ययन से भारत के सांस्कृतिक इतिहास का पता लगता है। खंडहरों से प्राचीन विशेष की वास्तु और शिल्प शैलियों पर प्रकाश पड़ता है। मंदिर, स्तूप और विहार से तत्कालीन धार्मिक स्थितियों का पता चलता है। ये केवल स्थापत्य कला और मूर्तिकला पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थिति पर भी प्रकाश डालते हैं। खंडहरों के अवशेष भारतीय सांस्कृतिक जीवन के इतिहास की एक नई सामग्री का निर्माण करते हैं। भारतीय इतिहास के निर्माण में स्थापत्यकार, वास्तुकार और शिल्पकार तीनों की प्रखर प्रतिभा के स्वर आदरणीय नहीं सिद्ध हुए हैं। प्राचीन खंडहरों में भारतीय जीवन की अमूल्य निधि अन्तर्निहित है। मिट्टी के बर्तनों में भी अलंकरणों का चित्रण किया गया है। मूर्तियों और भित्ति चित्रों (जैसे अजन्ता, बाघ गुफाएं) से भी इतिहास के अध्ययन में काफी सहायता मिलती है। कला के माध्यम से हम भारत और विदेशों के बीच के सम्पर्क का भी अनुमान कर सकते हैं। कला कृतियों से धार्मिक विचारों पर भी प्रकाश पड़ता है। जीवन और कला का अन्योन्याश्रय संबंध है। इसलिए हम यह स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि भारतीय इतिहास के अध्ययन में प्राचीन खण्डहर, वास्तुकला, शिल्पकला और स्मारकों से महत्त्व सहायता मिलती है।

साहित्यिक स्रोत :- साहित्यिक स्रोत के रूप में हम उन समस्त ग्रंथों को सम्मिलित करते हैं जो हमें ग्रंथों और लेखकों से प्राप्त होते हैं।

(१) धार्मिक साहित्य :- धार्मिक साहित्य में

और धर्म ग्रंथ सम्मिलित है।

[illegible]

हिन्दू धर्म ग्रंथ :- हिन्दू धर्म ग्रन्थों में प्रमुख स्थान श्रुतियों का है, जिनमें चारो वेद - ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सम्मिलित है। इनके अतिरिक्त ब्राह्मण (ऐतरेय, शतपथ) ग्रंथ, उपनिषद, आरण्यक, सूत्र ग्रंथ (धर्मसूत्र, गृह्य सूत्र आदि) स्मृति ग्रंथ (मनु, मत्स्य पुराण, वायु पुराण आदि कुल संख्या 18) और महाकाव्य (रामायण और महाभारत) प्रमुख ग्रंथ है जिनसे हमें वैदिक काल और उसके बाद के समय के राजनीतिक इतिहास और तत्कालीन सभ्यता का ज्ञान प्राप्त होता है।

बौद्ध धर्म ग्रंथ :- आदि बौद्ध धर्म ग्रंथ को पिटक पुकारा जाता है। ये तीन है (i) विनय पिटक, जिनमें बौद्ध संघ के संगठन और उससे संबंधित नियमों का उल्लेख है। (ii) सुत्त पिटक, जिनमें बौद्ध धर्म के उपदेशों का वर्णन है और

अभिधम्म पिटक (iii) अभिधम्म पिटक, जिनमें बौद्ध दर्शन का विवेचन है। इन तीनों को सम्मिलित रूप में "त्रिपिटक" पुकारा जाता है। बाद में महात्मा बुद्ध के पूर्व जीवन से संबंधित जातक कथाओं का निर्माण हुआ जिनकी संख्या 549 है। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म की महायान और तांत्रिक (वज्रयान) शाखाओं ने भी विभिन्न धार्मिक ग्रंथों की रचना की।

जैन ग्रंथों में भद्रबाहुचरित्र, परिशिष्टपर्वन, पुण्याश्रव कथाकोष, लोक विभाग आदि प्रमुख है।

जैन धर्म ग्रंथ :- आदि जैन-ग्रंथों को "आगम" पुकारा जाता है, बाद में उनका संकलन "अंग" नामक 12 ग्रंथों में हुआ जिनमें से एक खो चुका है। परंतु 11 अंग अब भी प्राप्त है। उसके पश्चात् भी विभिन्न जैन-ग्रंथों का निर्माण हुआ।

ऐतिहासिक एवं समकालीन ग्रंथ :- समकालीन "जीवन चरित" भी उस समय के इतिहास को जानने में अमूल्य सहायता प्रदान करते है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कौटिल्य का अर्थशास्त्र केवल भारत ही नहीं वरन् समस्त प्राचीन विश्व में एक महत्वपूर्ण रचना है। पाणिनी, पतंजलि के महाभाष्य, कालिदास के मालविकाग्निमित्र,

पाणिनी के अष्टाध्यायी

गार्गी संहिता, विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस, बाणभट्ट लिखित "हर्षचरित", कामन्दकीय नीतिशास्त्र, बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र, वाक्पतिराज द्वारा रचित गौड़वहो, परिमलगुप्त द्वारा रचित नवसाहसांक चरित, बिल्हण रचित विक्रमांकदेव चरित, कल्हण रचित राजतरंगिणी आदि ग्रंथ प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालते है। इसके अतिरिक्त सन्ध्याकरनन्दी

सन्ध्याकरनन्दी

Scanned by CamScanner

को 'रामचरित', आनन्द भट्ट की वल्लाल चरित, जयानक की पृथ्वीराज विजय, सोमेश्वर की कीर्ति कौमुदी आदि ग्रंथ भी ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

विदेशी लेखकों और यात्रियों का विवरण :- स्काईलैक्स फारस का एक यूनानी सैनिक था। फारसी शासक ने उसे सिन्धु प्रदेश की जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा था। उस बात का ज्ञान हमें हेरोडोटस (यूनानी इतिहासकार) से मिलता है। हेरोडोटस भारतीय सीमा प्रांत और फारसी साम्राज्य के राजनीतिक सम्बन्ध पर प्रकाश डालता है। दूसरा यूनानी लेखक हिकेटियस मिलेटस निवासी हिकेटियस है। भारत पर सिकन्दर के आक्रमण के समय बहुत से लेखक आए। एरिस्तोबुलस, निआर्कस, ओनेसीक्रिटस आदि के विवरण से सिकन्दर कालीन भारत का आँखों देखा वर्णन मिलता है। ओनेसिक्रिटस, मेगास्थनीज, डायमेकस, टॉलेमी (लिनियस), एरियन, प्लूटार्क (क्विंटस), जस्टिन, पेट्रोक्लीज, ई०पू० 144 में पोलिबियस, स्ट्राबो, टालेमी, क्विंटस, कर्टियस (कार्टिकस), डायोडोरस, सेल्युकस, फ्लिनी के कासमस इंडिकोप्लुस्टस आदि लेखकों की रचनाएँ भी भारतीय इतिहास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

विवरण्य एरियन डायोडोरस सिकुलस, क्रिगस इंडिकोप्लुस्टस

चीनी साहित्य से भी भारतीय इतिहास के निर्माण में बड़ी सहायता मिलती है। चीनी लेखक शुमाचीन (S-SU-MA-CHIEN) के रचनाओं से भारतीय इतिहास की सामग्री मिलती है। फाहियान, ह्वेनसांग (युवान च्वांग) और इत्सिंग तथा ह्वेको (Hyec-ho) के यात्रा विवरण, हुइली रचित युवान च्वांग की जीवनी और मातवालीन (Ma-Twa-Lin) की कृतियों से, तारिस्वामी और लामा तारानाथ के लेख से भी भारतीय इतिहास की सामग्री मिलती है।

फाह्यान ने 399 ई० से 414 ई०, ह्वेनसांग ने 629 ई० से 645 ई० व इत्सिंग ने 673 ई० से 695 ई० तक भारत की यात्रा की थी

मुसलमान पर्यटकों अलबिलादुरी, सुलेमान और अलमसूदी प्रसिद्ध हैं। अलबुरुनी, इब्नहौकल, अलउत्बी, मिनहाजुद्दीन आदि के ग्रंथों से भी भारतीय इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। अलबेरूनी ने भारत के संबंध में जो लिखा है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है। उसके तहकीके हिन्द में उस समय की भारतीय व्यवस्था का विवरण है।

उपर्युक्त सभी साधनों की सहायता से हम प्राचीन भारतीय इतिहास का लेखन वैज्ञानिक ढंग पर कर सकते हैं। सभी प्राचीन साधनों का यथासंभव उपयोग करने के बाद ही इतिहास का सही अध्ययन और मूल्यांकन हो सकता है। इतिहास धीरे-धीरे विज्ञान की कोटि में आ रहा है और वैज्ञानिक पद्धति को अपना कर ही हम प्राचीन भारत

की गुत्थियों को सुलझा सकते हैं। भारतीय इतिहास के ~~म~~ के तमस को आलोकित करने में उन सामग्रियों का उचित उपयोग अपेक्षित है।